आधे लोग हिंदी नहीं जानते- हुमा ने उठाए इंडस्ट्री पर सवाल

हुमा कुरैशी मनोरंजन जगत की उन चुनिंदा अभिनेत्रियों में से हैं जो अपनी बात बेबाकी से रखने के लिए जानी जाती हैं. फिल्मों से लेकर वेब सीरीज़ तक, उन्होंने अपने दमदार अभिनय से दर्शकों के बीच खास जगह बनाई है.

हाल ही में रिलीज़ हुई उनकी सीरीज़ महारानी में उनके किरदार और बोली ने हर किसी का ध्यान खींचा, जहाँ उन्होंने बिहारी भाषा सीखकर रियलिज़्म का स्तर और ऊँचा कर दिया. मगर इसी अनुभव ने उन्हें बॉलीवुड की एक गहरी सच्चाई से रूबरू भी कराया—एक ऐसी सच्चाई जिसे सुनकर दर्शक भी चौंक जाएंगे. हाल ही में शुभांकर मिश्रा के पॉडकास्ट में बातचीत के दौरान उन्होंने खुलकर कहा कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री का बड़ा विरोधाभास यही है कि यहाँ काम करने वाले कई लोग हिंदी में सहज नहीं हैं.

उन्होंने बताया कि सेट पर बातचीत अक्सर इंग्लिश में होती है और स्क्रिप्ट भी इंग्लिश में ही छपती है. हुमा के मुताबिक, यह स्थिति तब और अजीब लगती है जब फिल्में हिंदी दर्शकों के लिए ही बनाई जाती हैं. उनके अनुसार, कम से कम भाषा के स्तर पर इंडस्ट्री को अपनी जड़ों के प्रति ईमानदार होना चाहिए. उनका यह बयान तेजी से वायरल हुआ और कई लोगों ने इससे सहमति जताई. दूसरी तरफ, महारानी के लिए बिहारी भाषा सीखकर उन्होंने यह साबित कर दिया कि किरदार की जरूरत के अनुसार भाषा सीखना कोई बड़ी बात नहीं, बशर्ते कलाकार और टीम इसके प्रति प्रतिबद्ध हो. उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया कि वह किसी भी भाषा को काफी तेजी से सीख सकती हैं, अगर उसे रोजमर्रा की बातचीत में इस्तेमाल किया जाए.

अनुष्का सेन अपने पहले एल्बम के साथ बनीं पॉप कलाकार

भारतीय डिजिटल स्टार एवं अभिनेत्री अनुष्का सेन अपने पहले एकल, 'कैमेलियन' के रिलीज़ के साथ अपनी रचनात्मकता का विस्तार कर रही हैं, जो संगीत में उनका पहला कदम है. अनुष्का इस पॉप ट्रैक के माध्यम से गायन के क्षेत्र में कदम रख रही है. इसका निर्माण केन लुईस ने किया है, जो दो बार ग्रैमी पुरस्कार विजेता और आठ बार नामांकित हो चुके हैं और टेलर स्विफ्ट, केंड्रिक लैमर और कान्ये वेस्ट के साथ अपने काम के लिए जाने जाते हैं. अपने शानदार करियर के दौरान, लुईस 79 बिलबोर्ड नंबर 1 हिट गानों का हिस्सा रहे हैं, जिससे इस प्रोजेक्ट को उद्योग जगत में महत्वपूर्ण स्थान मिला है.

विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लगभग चार करोड़ ऑनलाइन फॉलोअर्स वाली अनुष्का ने डिजिटल क्रिएटर बनने से पहले भारतीय टेलीविजन पर एक बाल कलाकार के रूप में अपना करियर शुरू किया था. वर्ष 2024 में उन्होंने प्राइम वीडियो के आने वाले युग के नाटक 'दिल दोस्ती डिलेमा' में अपनी स्ट्रीमिंग शुरुआत की, और अपने प्रदर्शन के लिए प्रशंसा अर्जित की.

'कैमेलियन' सेन की हालिया अमेरिका यात्रा के दौरान रिकॉर्ड किया गया था, जहाँ लुईस ने इस गीत को एक गतिशील पॉप एंथम में ढालने में मदद की जो उनके कलात्मक विकास को दर्शाता है. यह ट्रैक परिवर्तन, पहचान और आत्मनिर्णय के विषयों पर आधारित है, जो सेन के संगीत से लंबे समय से जुड़े जुड़ाव पर आधारित है, जिसका उन्होंने अपनी माँ के मार्गदर्शन में छोटी उम्र से ही अध्ययन किया था.

अनुष्का ने कहा, 'संगीत हमेशा से मेरे जीवन का एक हिस्सा रहा है, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझमें वास्तव में अपना कुछ बनाने और इसे दुनिया के साथ साझा करने का साहस होगा.'

पारुल ने फिल्म की रिलीज से पहले स्वर्ण मंदिर में टेका मत्था

अभिनेत्री पारुल गुलाटी ने हाल ही में अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर जाकर अपनी आने वाली फिल्म किस किसको प्यार करूं 2 की रिलीज़ से पहले आशीर्वाद लिया.

पारुल गुलाटी अपनी अगली फिल्म 'किस किसको प्यार करूं 2' को लेकर काफी उत्साहित हैं. पारुल के लिए यह यात्रा एक भावनात्मक पल था जहां उन्होंने अपने अब तक के सफर के लिए वाहेगुरु का धन्यवाद किया. पारूल ने अपनी यात्रा के बारे में बात करते हुए कहा, 'स्वर्ण मंदिर हमेशा से मेरे दिल के बहुत करीब रहा है. यहाँ आते ही मुझे शांति और सादगी का एहसास होता है. मैं यहाँ वाहेगुरु का धन्यवाद करने आई थी. अपने काम, अपनी तरक्की और उन सभी खूबसूरत मौकों के लिए जो मेरे रास्ते में लगातार आते रहते हैं. इस यात्रा ने मुझे यह याद दिलाया कि जिंदगी आपको जहाँ भी ले जाए, ज़मीन से जुड़े रहना कितना ज़रूरी है. 'पारूल ने अपनी आने वाली फिल्म को लेकर उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, 'किस किसको प्यार करूं 2 मेरे लिए बहुत खास फिल्म है.

पुलकित की 'राहु-केतु' जनवरी में होगी रिलीज

फुकरे फेम पुलकित सम्राट और वरुण शर्मा की सुपरहिट कॉमेडी केमिस्ट्री एक बार फिर बड़े पर्दे पर देखने को मिलने वाली है. मेकर्स ने आखिरकार उनकी नई फिल्म 'राहु-केतु' की रिलीज डेट फिक्स कर दी है, जिससे फैंस के बीच उत्साह और बढ़ गया है. पुलकित ने इंस्टाग्राम पर मोशन पोस्टर शेयर करते हुए बताया कि फिल्म 16 जनवरी 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी. पोस्टर में दोनों की मजेदार झलक ने दर्शकों की उत्सुकता पहले ही बढ़ा दी है. फिल्म की शूटिंग हाल ही में पूरी हुई है और इसका बड़ा हिस्सा हिमाचल प्रदेश के कसोल में फिल्माया गया.

आध्यात्मिक एक्शन थ्रिलर में पहली बार टाइगर की एंट्री

फिल्म इंडस्ट्री इन दिनों एक नई हलचल से भरी हुई है, और यह हलचल पैदा हुई है एक ऐसे प्रोजेक्ट के कारण जो टाइगर श्रॉफ के करियर को एक बिल्कुल नई दिशा देने वाला है. निर्देशक राम माधवानी और निर्माता महावीर जैन की ताज़ा मल्टी-फ़िल्म डील की पहली फिल्म में टाइगर श्रॉफ लीड रोल निभा रहे हैं लेकिन इस बार जिस रूप में, वह उन्होंने पहले कभी नहीं किया. एक स्पिरिचुअल एक्शन थ्रिलर, जिसे भारतीय सिनेमा में पहली बार इस पैमाने पर बनाया जा रहा है.

टाइगर श्रॉफ को इस फिल्म में पूरी तरह नए अंदाज़ में पेश किया जाएगा. अब तक हाई-फ्लाईंग ऐक्शन और डांस से पहचाने जाने वाले टाइगर इस बार एक गहरे, विचारशील और आध्यात्मिक रूप से कनेक्टेड किरदार निभाएँगे. फिल्म की मांग के अनुसार वे मार्शल आर्ट, वेपन वर्क, और जापानी आध्यात्मिक प्रथाओं पर विशेष प्रशिक्षण लेने वाले हैं.

बताया जा रहा है कि उनका लुक, उनका बॉडी लैंग्वेज और उनका एक्शन स्टाइल—सब कुछ बदलेगा. फिल्म की कहानी भारत और जापान की मिश्रित पृष्ठभूमि पर आधारित होगी. जापान की आध्यात्मिक विरासत और भारतीय दर्शन का मेल फिल्म का मुख्य भाव रचेगा. यह अनोखा कॉन्सेप्ट ग्लोबल ऑडियंस को आकर्षित करने के उद्देश्य से बनाया गया है. मेकर्स का मानना है कि इसका थीम इंटरनेशनल सिनेमा में भी आसानी से अपनी जगह बना सकता है. यही वजह है कि फिल्म का एक बड़ा हिस्सा जापान के ऐतिहासिक मंदिरों, पर्वतीय क्षेत्रों और शहरी आधुनिकता के बीच शूट होने वाला है. मेकर्स फिलहाल लीड एक्ट्रेस और एक दमदार, लेयर्ड विलेन के चयन की प्रक्रिया में हैं. चर्चाएँ हैं कि खलनायक का रोल फिल्म के सबसे प्रभावशाली और यादगार किरदारों में से एक होगा. राम माधवानी की कोर टीम पहले से फिल्म के प्रीविज़ुअलाइज़ेशन पर काम शुरू कर चुकी है.

कलाकारों ने पुरुष दिवस पर साझा किए विचार

हर साल 19 नवंबर को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस यानी इंटरनेशनल मेंन्स डे हमें अपनी जिंदगी के उन पुरुषों को धन्यवाद देने का मौका देता है जो चुपचाप, बिना कुछ कहे, ज़िम्मेदारियां निभाते रहते हैं. इस मौके पर आर्य बब्बर, जो ज़ी टीवी के शो 'जागृति एक नई सुबह' में कालीकांत का किरदार निभा रहे हैं, कहते हैं, 'अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस हमें याद दिलाता है कि मर्द होना मतलब अपनी भावनाओं को ताकत के नकाब के पीछे छुपाना नहीं है. असली हिम्मत अपनी संवेदनाओं को स्वीकार करने में है.

सोनाक्षी बत्रा, जो 'जगद्धात्री' में मुख्य किरदार निभा रही हैं, कहती हैं, 'हम अक्सर महिलाओं की ताकत और सहनशीलता की बात करते हैं, लेकिन उन पुरुषों को भी सराहना मिलनी चाहिए जो हमेशा हमारे साथ खड़े रहते हैं - पिता, भाई, दोस्त, जीवनसाथी - जो चुपचाप हमें संभालते हैं.

राजेंद्र चावला, जो 'लक्ष्मी निवास' में श्रीनिवास की भूमिका निभा रहे हैं, कहते हैं, 'बहुत सालों से पुरुषों को ये सिखाया गया है कि भावनाएं दिखाना कमज़ोरी है, लेकिन सच तो ये है कि अपनी भावनाएं ईमानदारी से स्वीकार करना सबसे बड़ी ताकत है.

मोहक मटकर, जो 'सरू' में मुख्य भूमिका निभा रही हैं, कहती हैं, 'आज का समय ऐसे पुरुषों की मांग करता है जो न सिर्फ मजबूत हों, बल्कि संवेदनशील भी हों. जो अपने एहसास कहने से न डरें.

अभिषेक शर्मा, जो 'वसुधा' में देवांश का किरदार निभा रहे हैं, कहते हैं, 'बहुत से पुरुष चुपचाप बहुत कुछ सहते हैं - जिम्मेदारियां, डर, थकान, और अनकही भावनाएं. पुरुष दिवस पर मैं चाहता हूँ कि हम सभी इस चुपचाप निभाई जा रही हिम्मत को सराहें.

निशी सक्सेना, जो 'वसुधा' में नंदिनी की भूमिका निभा रही हैं, कहती हैं, 'पुरुष हमारे जीवन में कई रूपों में मौजूद हैं - साथी, मार्गदर्शक, रक्षक, दोस्त - और अक्सर हम उनके भावनात्मक पक्ष को नजरअंदाज कर देते हैं.

शेज़ान खान, जो 'गंगा माई की बेटियां' में सिद्धू का किरदार निभा रहे हैं, कहते हैं, 'मेरे लिए मर्दानगी अपनी ताकत साबित करने में नहीं, बल्कि अपने दिल और अपनी सच्चाई के साथ जीने में है. पुरुष दिवस पर मैं हर पुरुष को यह कहना चाहता हूँ कि वे अपनी भावनाएं खुलकर जताएं,

गौतम को मात देने अनुपमा ने रचा बड़ा खेल

सीरियल अनुपमा का आने वाला ट्रैक दर्शकों के लिए भावनाओं, सस्पेंस और बड़े ट्विस्ट का पूरा पैकेज लेकर आ रहा है. कहानी ऐसे मोड़ पर पहुंच चुकी है जहां हर किरदार अपनी-अपनी लड़ाइयों में उलझा है और इन सबके केंद्र में है खुद अनुपमा, जो एक बार फिर अपनी फैमिली, बच्चों और रिश्तों को बचाने के लिए सबसे बड़ा रिस्क उठाने जा रही है. गौतम की साजिशें अब कोठारी परिवार के सिर पर खतरों के बादल बनकर मंडरा रही हैं.

बिजनेस हथियाने के लिए वो अंतिम चाल चलने वाला है, जिसमें माही भी उसका साथ दे रही है. लेकिन असली मोड़ तब आता है जब अनुपमा को गौतम की पूरी प्लानिंग की भनक लग जाती है. वह समझ जाती है कि कोठारी परिवार को बचाने के लिए उसे अब अपनी सीमा से बाहर जाकर खेलना होगा. इसलिए वह अपने सबसे बड़े दुश्मन—ख्याति—से हाथ मिलाने का फैसला करती है. ख्याति भी हालात की गंभीरता को समझती है और दोनों मिलकर गौतम की पोल जमाने के सामने खोलने का प्लान बनाती हैं.

पराग और वसुंधरा के सामने सच का खुलना एक बड़े धमाके जैसा होगा. दूसरी तरफ परिवार का माहौल भी तेजी से बिगड़ रहा है. परी तलाक की प्रक्रिया से गुजर रही है और अनुपमा के साथ मुंबई जाने से साफ इनकार कर देती है. ईशानी का गुस्सा और बर्ताव सभी को डराने लगता है. राजा अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पर जीने का ऐलान करता है, जिससे परिवार की लड़ाइयाँ और बढ़ जाती हैं. इन सब के बीच अनुपमा एक नया फैसला लेती है—वह परी और ईशानी को जबरदस्ती मुंबई ले जाने वाली है ताकि वह फिर से अपनी जिंदगी शुरू कर सके. कहानी अब नए शहर, नए रिश्तों और नए टकरावों की ओर बढ़ रही है.

मसाला खेती ने पकड़ी रफ्तार

सर्दी यानी रबी सीजन में मसाला फसलों की खेती खेती-किसानी में आय बढ़ाने का सबसे फायदा-मंद विकल्प बनकर उभर रही है. कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक़, धनिया, मेथी, लहसुन, सौंफ और अजवाइन जैसी फसलें ठंडे मौसम में तेजी से बढ़ती हैं और इनकी बाजार मांग पूरे साल बनी रहती है.

रबी सीजन की कम तापमान वाली जलवायु मसाला फसलों के लिए एकदम अनुकूल मानी जाती है, जिससे उत्पादन भी अच्छा होता है और लागत पर नियंत्रण रहता है. किसान मसाला खेती की शुरुआत बहुत कम लागत से कर सकते हैं. एक एकड़ में धनिया या मेथी लगाने का खर्च लगभग 10 से 15 हजार रुपये आता है, जिसमें बीज, हल्की जुताई और जैविक खाद शामिल है. मसाला फसलों में रासायनिक दवाइयों की जरूरत बेहद कम पड़ती है, जिससे अतिरिक्त खर्च घट जाता है.

सिंचाई भी 2-3 बार ही पर्याप्त मानी जाती है. कटाई के बाद फसल को सुखाकर किसान इसे सीधे मंडी, स्थानीय मसाला प्रोसेसिंग यूनिट या हर्बल कंपनियों को बेच सकते हैं. कृषि विशेषज्ञ बताते हैं कि एक एकड़ मसाला फसल से किसान 40 से 80 हजार रुपये तक की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं.

औषधीय पौधों की खेती बनी कमाई का जरिया

प्राकृतिक चिकित्सा और आयुष उत्पादों की बढ़ती मांग के बीच देशभर में औषधीय पौधों की खेती किसानों के लिए नई उम्मीद बनकर उभर रही है. हर्बल दवाइयों, आयुर्वेदिक तेलों और हर्बल चायों की मांग बढ़ने से इन पौधों की कीमतों में भी निरंतर बढ़ोतरी हो रही है.

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड और आयुष मंत्रालय ने हाल में जारी दिशा-निर्देशों में बताया कि औषधीय खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को 30 से 75 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जा रही है, जिससे अश्वगंधा, लेमनग्रास, तुलसी, गिलोय और शतावरी जैसे पौधों की खेती तेजी से बढ़ रही है.

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, इन पौधों में उत्पादन लागत कम आती है और कम पानी वाली जमीन पर भी यह अच्छे से उग जाते हैं, जिससे किसानों को पारंपरिक फसलों से अधिक लाभ मिलता है.

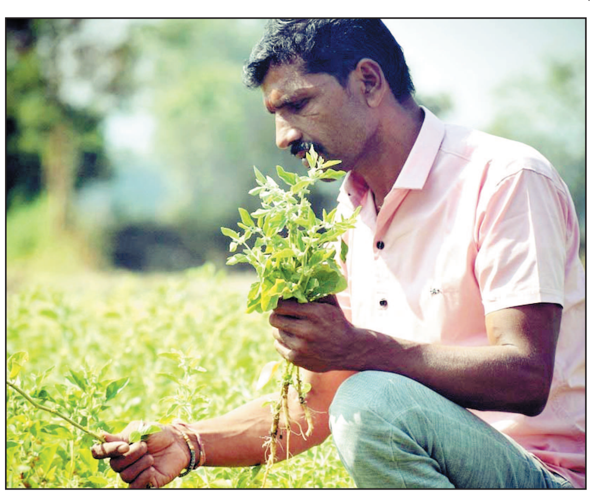

जानें कैसे करें शुरुआत- औषधीय खेती की शुरुआत करना भी बेहद सरल है. विशेषज्ञ बताते हैं कि किसान सबसे पहले अपने क्षेत्र की मिट्टी और मौसम को ध्यान में रखते हुए दो-तीन औषधीय पौधों का चयन करें. इसके बाद नजदीकी प्रमाणित नर्सरी से पौधे या बीज खरीदें और खेत में हल्की जुताई के बाद जैविक खाद मिलाकर रोपण करें.

> सरकार द्वारा प्रशिक्षण, मार्केट लिंक और प्रोसेसिंग यूनिट लगाने पर वित्तीय सहायता दिए जाने से किसानों को अतिरिक्त लाभ मिल रहा है. कृषि जागरण और अन्य कृषि विशेषज्ञों की रिपोर्ट के अनुसार, सिर्फ लेमनग्रास और अश्वगंधा जैसी फसलों से किसान प्रति एकड़ 1.5 से 3 लाख रुपये तक की आय कमा रहे हैं. उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में हाल ही में लागू किया गया औषधीय पादप विकास प्रोजेक्ट इसका बड़ा उदाहरण है.

इन पौधों में रासायनिक कीटनाशक की जरूरत बहुत कम पड़ती है, इसलिए देखभाल भी आसान रहती है.

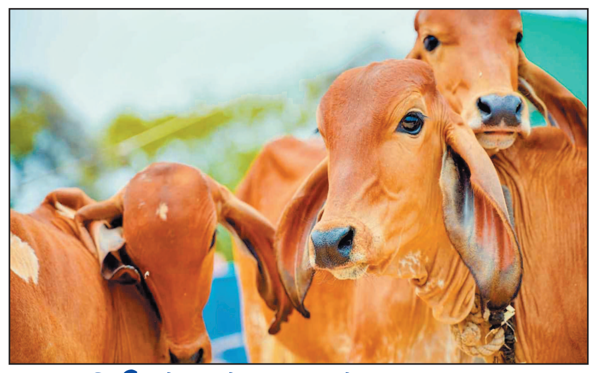

सर्दियों में स्वदेशी गाय की देखभाल पर दें जोर

ठंड के मौसम में स्वदेशी गाय पालन किसानों की आमदनी बढ़ाने का मजबूत आधार बन रहा है. विशेषज्ञों के अनुसार, गिर, साहीवाल, राठी, हरियाणा और थारपारकर जैसी स्वदेशी नस्लें कम तापमान में भी मजबूत प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं, लेकिन इस मौसम में उनकी विशेष देखभाल जरूरी है.

पशु चिकित्सकों का कहना है कि ठंड से बचाने के लिए गायों को सूखे बिछावन, तिरपाल या बोरी से ढके शेड में रखना चाहिए. सुबह-शाम हल्का गुनगुना पानी देना चाहिए, जिससे पाचन क्रिया ठीक रहे.

चारे में सर्दियों के दौरान हरा चारा, भूसा, खल, गुड़-चोकर और मिनरल मिक्स शामिल करने से दूध उत्पादन स्थिर रहता है. ठंड के दिनों में 15-20 मिनट धूप में खुला छोड़ना भी उनके स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है. किसान स्वदेशी गाय के दूध से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं.

शुद्ध ए-2 दूध की बाजार कीमत 60 से 100 रुपये प्रति लीटर तक मिल रही है. एक अच्छी नस्ल की गाय औसतन 8 से 12 लीटर प्रतिदिन दूध देती है, जिससे किसान एक गाय से महीने में 12,000 से 25,000 रुपये तक की आय प्राप्त कर सकते हैं. इसके अतिरिक्त, गोबर और गोमूत्र से जैविक खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट बनाने पर अतिरिक्त कमाई भी संभव है.

पशुपालकों को सब्सिडी

इधर सरकार ने पशुपालकों को राहत देते हुए स्वदेशी गाय पालन पर अनुदान योजनाएं शुरू की हैं. 'दुग्ध मिशन' और 'स्वदेशी गौ संवर्धन योजना' के तहत किसानों को स्वदेशी नस्ल अपनाने पर 15,000 रुपये तक सहायता दी जा रही है, जबकि कुछ राज्यों में मिनी डेयरी यूनिट पर 50 प्रतिशत तक सब्सिडी उपलब्ध है. इन योजनाओं से छोटे किसानों में पशुपालन का रुझान तेजी से बढ़ रहा है.

स्वास्थ्य के भरोसेमंद साथी हैं पीले चने

सर्दियों के मौसम में शरीर को भीतर से गर्म रखने और ऊर्जा बनाए रखने के लिए पारंपरिक खाद्य पदार्थों का महत्व बढ़ जाता है. इन्हीं में से एक है पीला चना, जिसे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वास्थ्य के लिए बेहद उपयोगी माना जाता है.

पोषण विशेषज्ञों के अनुसार, पीला चना ठंड के दिनों में प्राकृतिक गर्माहट प्रदान करता है और शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है. सर्दियों में लोग इसे भुने हुए चने, चने की दाल, लापसी और सत्तू के रूप में सेवन करते हैं, जो न केवल पेट को लंबे समय तक भरा रखता है, बल्कि शरीर को लगातार ऊर्जा भी देता है. इसमें मौजूद प्रोटीन, फाइबर, आयरन और मिनरल्स ठंड से होने वाली कमजोरी, सुस्ती और भूख की अनियमितता को दूर करते हैं.

असली पीले चने की पहचान-- हाल के दिनों में उपभोक्ता इस बात को लेकर अधिक जागरूक हो रहे हैं कि उन्हें शुद्ध और असली पीला चना ही मिले. विशेषज्ञ बताते हैं कि असली चना पहचानना कठिन नहीं है. असली पीले चने का रंग हल्का सुनहरा होता है, दाने समान आकार के और स्पर्श में ठोस महसूस होते हैं. इसे पानी में डालने पर कोई रंग नहीं छोड़ता और न ही दानों पर कोई कृत्रिम चमक दिखाई देती है.

चने की सतह पर हल्की प्राकृतिक परत और मिट्टी जैसी हल्की खुशबू इसकी गुणवत्ता का संकेत मानी जाती है. पोषण विशेषज्ञ बताते हैं कि नियमित रूप से पीला चना खाने से शरीर गर्म रहता है, पाचन मजबूत होता है और सर्दियों में होने वाली थकान व कमजोरी कम होती है. पारंपरिक रूप से इसे 'सर्दियों का ऊर्जा भंडार' माना जाता है, जो आज भी उतना ही उपयोगी और भरोसेमंद है.